नमो-नमो दुर्गे सुख करनी। नमो-नमो दुर्गे दुःख हरणी।।

शनिवार, 8 अगस्त, 2026 ।

वर्ष 19 । अंक 115 । पृष्ठ 4 ।

आरएनआई नंबर : RAJHIN/2007/20298

व्हाट्स एप नंबर : 85291-15101

Email : berisgnr@gmail.com

website: www.sandhyadep.world

सॉंध्यदीप

We Fight For Human Rights

होटलों में बालिका से गैंगरेप मामले में 22 आरोपितों के खिलाफ चार्जशीट

दो होटल मालिक भी आरोपितों में शामिल, फरार आरोपितों की तलाश जारी; गिरफ्तारी के बाद दाखिल होगा अलग आरोप पत्र

श्रीगंगानगर। राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में 13 वर्षीय बालिका से जबरन वेश्यावृत्ति कराने और सामूहिक दुष्कर्म के गंभीर मामले में पुलिस ने जांच का एक महत्वपूर्ण चरण पूरा कर लिया है। मामले में गिरफ्तार किए गए 22 आरोपितों के खिलाफ जांच पूरी करने के बाद पुलिस ने न्यायालय में आरोप पत्र पेश कर दिया है। आरोपितों में दो होटल मालिक भी शामिल बताए गए हैं।

मामले की जांच आरपीएस कैलाश दान देथा द्वारा की गई। उन्होंने पुष्टि करते हुए बताया कि बालिका को होटलों में ले जाकर जबरन वेश्यावृत्ति में धकेलने और उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किए जाने के मामले में अब तक गिरफ्तार किए गए 22 आरोपितों के खिलाफ पुलिस ने अपनी जांच पूरी कर ली है। जांच के आधार पर तैयार आरोप पत्र न्यायालय में प्रस्तुत कर दिया गया है।

22 आरोपितों के खिलाफ पूरी हुई जांच

पुलिस जांच में अब तक गिरफ्तार किए गए आरोपितों की भूमिका को लेकर साक्ष्यों और उपलब्ध तथ्यों की जांच की गई। इसके बाद पुलिस ने गिरफ्तार 22 आरोपितों के संबंध में न्यायालय में आरोप पत्र प्रस्तुत किया। इन आरोपितों में दो होटल संचालक अथवा मालिक भी शामिल हैं। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने जांच के दौरान सामने आए तथ्यों के आधार पर आरोपितों की भूमिका को दस्तावेजों में दर्ज किया है।

कुछ आरोपित अभी भी फरार : पुलिस के अनुसार मामले में शामिल कुछ आरोपित अभी तक पुलिस की गिरफ्त से बाहर हैं। उनकी तलाश में लगातार छापेमारी की जा रही है। पुलिस फरार आरोपितों के संभावित ठिकानों पर दबिश देने के साथ उनकी गिरफ्तारी के प्रयास कर रही है।

जांच अधिकारी कैलाश दान देथा के अनुसार फरार आरोपितों की गिरफ्तारी के बाद उनके खिलाफ भी नियमानुसार अलग से आरोप पत्र न्यायालय में पेश किया जाएगा। फरार आरोपितों की मामले में क्या भूमिका रही और उनके खिलाफ जांच में कौन-कौन से तथ्य सामने आते हैं, इसका उल्लेख गिरफ्तारी के बाद प्रस्तुत किए जाने वाले आरोप पत्र में किया जाएगा।

जांच अभी पूरी तरह समाप्त नहीं मानी जाएगी : 22 गिरफ्तार आरोपितों के खिलाफ आरोप पत्र पेश किए जाने के बावजूद मामले की कार्रवाई पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। फरार आरोपितों की गिरफ्तारी और उनसे संबंधित साक्ष्यों की जांच के बाद पुलिस आगे की कार्रवाई करेगी। यदि जांच के दौरान किसी अन्य व्यक्ति की भूमिका सामने आती है तो उसके संबंध में भी कानून के अनुसार कार्रवाई की जा सकती है।

पुलिस का कहना है कि फरार आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए प्रयास जारी हैं। उनकी गिरफ्तारी के बाद मामले में आगे की कानूनी प्रक्रिया पूरी की जाएगी।

न्यायालय में चलेगा मामला : पुलिस द्वारा आरोप पत्र न्यायालय में पेश किए जाने के बाद अब मामले की न्यायिक प्रक्रिया आगे बढ़ेगी। आरोप पत्र में पुलिस द्वारा जांच के दौरान एकत्र किए गए साक्ष्यों और आरोपितों की भूमिका से संबंधित तथ्यों को न्यायालय के समक्ष रखा गया है। अब न्यायालय में इन तथ्यों और उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई होगी।

फाजिल्का में बड़ी कार्रवाई, 30 किलो हेरोइन बरामद

बीएसएफ और काउंटर इंटेलीजेंस की संयुक्त कार्रवाई, अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत 150 करोड़ रुपये से अधिक

फाजिल्का। पंजाब के फाजिल्का जिले में नशा तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत सुरक्षा एजेंसियों को बड़ी सफलता मिली है। बीएसएफ की 55वीं बटालियन और काउंटर इंटेलीजेंस विंग की संयुक्त टीम ने कार्रवाई करते हुए करीब 30 किलो हेरोइन बरामद की है। बरामद हेरोइन की अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत 150 करोड़ रुपये से अधिक बताई जा रही है।

गुप्त सूचना के आधार पर की गई नाकाबंदी : जानकारी के अनुसार, काउंटर इंटेलीजेंस विंग को फाजिल्का क्षेत्र में नशा तस्करी से संबंधित गुप्त सूचना मिली थी। सूचना को गंभीरता से लेते हुए बीएसएफ और काउंटर इंटेलीजेंस की संयुक्त टीम ने फाजिल्का के शतीरवाला रोड पर विशेष नाकाबंदी की।

नाकाबंदी के दौरान टीम ने बाइक पर सवार दो संदिग्ध युवकों को रोककर उनकी तलाशी ली। तलाशी के दौरान पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों को उनके कब्जे से गट्टों में छिपाकर रखे गए हेरोइन के पैकेट मिले।

53 पैकेटों में मिली हेरोइन : जांच के दौरान कुल 53 पैकेट बरामद किए गए। इनमें करीब 30 किलो हेरोइन होने की बात सामने आई है। बरामद नशीले पदार्थ की अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमत 150 करोड़ रुपये से अधिक आंकी गई है।

इस बरामदगी को फाजिल्का क्षेत्र में नशा तस्करी के खिलाफ सुरक्षा एजेंसियों की बड़ी कार्रवाई माना जा रहा है। एजेंसियां अब यह पता लगाने में जुटी हैं कि इतनी बड़ी मात्रा में हेरोइन कहां से लाई गई थी और इसे आगे कहां पहुंचाया जाना था।

दो आरोपी गिरफ्तार : फाजिल्का स्टेट स्पेशल सेल के इंचार्ज इंस्पेक्टर सतीश कुमार के अनुसार, गिरफ्तार आरोपितों की पहचान सुखविंदर सिंह निवासी गांव नूरशाह और मनप्रीत सिंह निवासी गांव हसता कलां, जिला फाजिल्का के रूप में हुई है।

दोनों आरोपितों के खिलाफ स्टेट स्पेशल ऑपरेशन सेल थाना फाजिल्का में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस अब आरोपितों से पूछताछ कर रही है और नशा तस्करी के पूरे नेटवर्क का पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है।

तस्करी नेटवर्क की जांच तेज : इतनी बड़ी मात्रा में हेरोइन की बरामदगी के बाद सुरक्षा एजेंसियों की जांच का दायरा बढ़ने की संभावना है। पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि आरोपितों के साथ नशा तस्करी के इस नेटवर्क में और कौन-कौन लोग जुड़े हुए हैं।जांच एजेंसियां आरोपितों के संपर्कों, नशे की खेप के स्रोत और इसे आगे सप्लाई किए जाने वाले संभावित ठिकानों के बारे में जानकारी जुटा रही हैं। अधिकारियों का कहना है कि पूछताछ और जांच के आधार पर मामले में आगे और गिरफ्तारियां हो सकती हैं।

दुर्गा मंदिर का वार्षिकोत्सव शुरू

श्रीगंगानगर। विनोबा बस्ती स्थित श्री दुर्गा मंदिर का 68वां पांच दिवसीय वार्षिक उत्सव भक्तिमय एवं श्रद्धापूर्ण वातावरण में धूमधाम से प्रारंभ हुआ। सचिव राजेश वाट्स ने बताया कि 68वें वार्षिक उत्सव का विधिवत शुभारंभ अक्षत-पुष्प एवं वैदिक मंत्रोच्चार के साथ झंडा पूजन से हुआ, जिसके उपरांत मंदिर प्रांगण से भव्य झंडा नगर परिक्रमा निकाली गई। झंडा पूजन झांकीवाले बालाजी मंदिर के मुख्य सेवादार प्रेम अग्रवाल (गुरुजी), मन्नत दरबार से बाबा भूषण गोयल तथा मुख्य यजमान श्रीमती ऊषा वधवा (पत्नी डॉ. कृष्ण वधवा, रायपुर, छत्तीसगढ़), प्रेम वधवा एवं विंकल-प्रशांत कालड़ा द्वारा किया गया। भव्य झंडा नगर परिक्रमा शहर के विभिन्न प्रमुख मार्गों से होती हुई पुनः मंदिर प्रांगण पहुंची। पूरे रास्ते श्रद्धालुओं ने जगह-जगह पुष्प वर्षा कर तथा श्रद्धालुओं को शीतल जल पिलाकर व प्रसाद वितरित कर झंडा नगर परिक्रमा का भव्य स्वागत किया। मंदिर में महाआरती कर प्रसाद वितरित किया गया। उत्सव के द्वितीय दिवस शनिवार प्रातः 8.15 बजे से जय-जय अंबे जय जगदंबे का 12 घंटे का अखंड जाप प्रारंभ हुआ, जो रात्रि 8.15 बजे तक निरंतर जारी रहेगा। इस अखंड जाप में विभिन्न धार्मिक मंडल भाग ले रहे हैं। रात्रि 8.15 बजे जाप की समाप्ति पर भजन-कीर्तन के साथ माता रानी की विशेष आरती उतारी जाएगी।

वार्षिक उत्सव कार्यक्रमों की श्रृंखला में तृतीय दिवस 9 अगस्त, रविवार को रात्रि 9.15 बजे मां भगवती का विशाल जागरण आयोजित किया जाएगा, जिसमें अमृतसर के प्रसिद्ध टीवी आर्टिस्ट लविश लव अपनी सुमधुर वाणी में मां भगवती की महिमा का गुणगान करेंगे। चतुर्थ दिवस 10 अगस्त, सोमवार को प्रातः 11.15 बजे अखंड रामायण पाठ का शुभारंभ होगा। पंचम दिवस 11 अगस्त, मंगलवार को प्रातः 11.15 बजे अखंड रामायण पाठ का भोग एवं पूर्णाहुति होगी, जिसके बाद दोपहर 12.15 बजे से विधि-विधानपूर्वक हवन किया जाएगा एवं श्रद्धालुओं को माता रानी का अटूट भण्डारा वितरित किया जाएगा।

श्री दुर्गा मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष सुशील मल्होत्रा 'राजू', उपाध्यक्ष दीपक वाट्स, सचिव राजेश वाट्स, उपसचिव राजू कम्बलवाला, कोषाध्यक्ष दीपक जसूजा 'जोजी', ऑडिटर इन्द्र कुमार गोयल, आयोजन से जुड़ी विभिन्न कमेटियों के प्रभारियों सहित समस्त सेवादार उत्साहपूर्वक व्यवस्थाओं में जुटे हुए हैं। प्रबंध समिति द्वारा समस्त धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं से 68वें वार्षिक महोत्सव कार्यक्रमों में सपरिवार अधिकाधिक संख्या में शामिल होकर मां भगवती का आशीर्वाद प्राप्त करने का आह्वान किया गया है। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भक्तजन उपस्थित थे।

पंजाब में समाप्त नहीं हो रहा कांग्रेस गुटबाजी का सिलसिला

सरकार के खिलाफ प्रदर्शन में भी सामने आ रहे गुटों के मतभेद, प्रदेश अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री के समर्थकों में खींचतान

लुधियाना। पंजाब कांग्रेस में आपसी गुटबाजी का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। प्रदेश की आम आदमी पार्टी सरकार के खिलाफ कांग्रेस लगातार विरोध-प्रदर्शन कर रही है, लेकिन इन प्रदर्शनों के दौरान भी पार्टी के भीतर चल रही खींचतान खुलकर सामने आ रही है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अमरिन्द्रसिंह राजा वडिंग और पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी के समर्थकों के बीच मतभेद पार्टी के लिए चिंता का विषय बने हुए हैं।

कांग्रेस की ओर से सरकार के खिलाफ आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों का उद्देश्य जहां सरकार को घेरना और पार्टी कार्यकर्ताओं को एकजुट करना है, वहीं कई मौकों पर पार्टी के भीतर के मतभेद ही चर्चा का विषय बन जाते हैं। इससे कांग्रेस के सरकार विरोधी अभियान को भी नुकसान पहुंचने की आशंका जताई जा रही है।

प्रदर्शन के मंच पर भी दिख रही खींचतान : पंजाब कांग्रेस के भीतर अलग-अलग नेताओं के समर्थकों के बीच लंबे समय से राजनीतिक वर्चस्व को लेकर खींचतान की चर्चा होती रही है। प्रदेश अध्यक्ष राजा वडिंग का अपना समर्थक वर्ग है, जबकि पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी के साथ जुड़े नेताओं और कार्यकर्ताओं की भी पार्टी में प्रभावी मौजूदगी है।

सरकार के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान दोनों खेमों के समर्थकों की सक्रियता को लेकर भी पार्टी के भीतर मतभेद सामने आते रहे हैं। ऐसे में विपक्षी दल के रूप में कांग्रेस जिस एकजुटता का प्रदर्शन करना चाहती है, वह गुटीय राजनीति के कारण कमजोर पड़ती दिखाई दे रही है।

हाईकमान के सामने चुनौती : पंजाब कांग्रेस में चल रही गुटबाजी को समाप्त करना कांग्रेस हाईकमान के लिए भी चुनौती बना हुआ है। पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व की ओर से समय-समय पर प्रदेश नेताओं को एकजुट होकर काम करने का संदेश दिया जाता रहा है, लेकिन जमीनी स्तर पर नेताओं के बीच मतभेद पूरी तरह समाप्त होते दिखाई नहीं दे रहे हैं। पार्टी के भीतर यह सवाल भी उठ रहा है कि यदि कांग्रेस सरकार के खिलाफ मजबूत विपक्ष की भूमिका निभाना चाहती है तो उसे सबसे पहले अपने संगठन के भीतर चल रही खींचतान को खत्म करना होगा। नेताओं और कार्यकर्ताओं के अलग-अलग खेमों में बंटे रहने से पार्टी के आंदोलन और संगठनात्मक गतिविधियों पर असर पड़ सकता है।

प्रभारी भूपेश बघेल को लेकर भी नाराजगी : पंजाब कांग्रेस के प्रभारी भूपेश बघेल को लेकर भी पार्टी के भीतर असंतोष की बात सामने आती रही है। कांग्रेस के कुछ नेताओं की ओर से प्रदेश प्रभारी को बदलने की मांग किए जाने की चर्चा है। पार्टी के अनेक नेता कथित तौर पर कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व के समक्ष अपनी आपत्तियां और सुझाव रख चुके हैं।

पार्टी के भीतर प्रभारी की भूमिका को लेकर उठ रहे सवालों ने गुटबाजी की बहस को और हवा दी है। हालांकि, कांग्रेस के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि अलग-अलग नेताओं के बीच मतभेदों को किस तरह संगठनात्मक अनुशासन के भीतर रखते हुए पार्टी को एकजुट किया जाए।

आपसी कलह से बढ़ सकती हैं मुश्किलें : पंजाब में कांग्रेस के सामने सत्ता पक्ष के खिलाफ मजबूत विपक्ष के रूप में अपनी भूमिका स्थापित करने की चुनौती है। ऐसे में यदि पार्टी के भीतर गुटबाजी लगातार जारी रहती है तो इसका सीधा असर संगठन की मजबूती और राजनीतिक गतिविधियों पर पड़ सकता है।

राजनीतिक जानकारों का मानना है कि कांग्रेस के लिए सरकार के खिलाफ मुद्दे उठाने के साथ-साथ अपने नेताओं और कार्यकर्ताओं को एक मंच पर लाना भी जरूरी है। यदि प्रदेश नेतृत्व और अलग-अलग गुटों के बीच मतभेद दूर नहीं हुए तो पार्टी को बाहरी राजनीतिक चुनौतियों के साथ-साथ अपनी ही अंदरूनी कलह का सामना करना पड़ सकता है। f

फलहाल पंजाब कांग्रेस में गुटीय खींचतान को लेकर स्थिति पूरी तरह सामान्य नहीं हुई है और अब नजर इस बात पर है कि कांग्रेस हाईकमान इस विवाद को सुलझाने के लिए क्या कदम उठाता है।

सीनियर आईपीएस की अनदेखी का मामला : पंजाब सीएम के संज्ञान में पहुंचा

डॉ. रवजोत ग्रेवाल को जल्द जिले की कमान मिलने की चर्चा

श्रीगंगानगर। पंजाब पुलिस के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी डॉ. रवजोत ग्रेवाल को लंबे समय से फील्ड पोस्टिंग नहीं मिलने का मामला अब मुख्यमंत्री भगवंत मान के संज्ञान में पहुंच गया है। प्रशासनिक और पुलिस महकमे में चर्चा है कि मामले के मुख्यमंत्री स्तर तक पहुंचने के बाद डॉ. ग्रेवाल को जल्द ही किसी महत्वपूर्ण जिले की कमान सौंपी जा सकती है।

डॉ. ग्रेवाल वर्तमान में पुलिस मुख्यालय में तैनात हैं, जबकि उनकी प्रशासनिक क्षमता और फील्ड में काम करने के अनुभव को देखते हुए उन्हें जिले की कमान नहीं सौंपे जाने को लेकर सवाल उठ रहे हैं। खास तौर पर ऐसे समय में जब पंजाब पुलिस को कानून-व्यवस्था, नशे के खिलाफ अभियान और आम जनता के साथ पुलिस के बेहतर समन्वय जैसे मोर्चों पर अनुभवी अधिकारियों की जरूरत है।

जिस जिले में गए, छोड़ी अलग पहचान

डॉ. रवजोत ग्रेवाल की पहचान ऐसे अधिकारी के रूप में बनी है जिन्होंने अपनी पोस्टिंग के दौरान पुलिसिंग के साथ-साथ आम लोगों के साथ संवाद और व्यवहार को भी प्राथमिकता दी। जिन जिलों में उन्हें जिम्मेदारी मिली, वहां उन्होंने अपने काम करने के तरीके और कुशल व्यवहार की अलग छाप छोड़ी।

यही वजह है कि उनके समर्थक और पुलिस महकमे से जुड़े लोग यह सवाल उठा रहे हैं कि जब एक अधिकारी के पास फील्ड का अनुभव और प्रशासनिक क्षमता दोनों मौजूद हैं, तो उन्हें महत्वपूर्ण जिले की कमान से दूर क्यों रखा गया है?

पीएचक्यू पोस्टिंग ने बढ़ाई चर्चा

वरिष्ठ अधिकारियों को फील्ड से हटाकर पुलिस मुख्यालय में तैनात करना प्रशासनिक व्यवस्था का सामान्य हिस्सा है। लेकिन जब किसी अनुभवी अधिकारी को लंबे समय तक फील्ड जिम्मेदारी से दूर रखा जाता है तो उसके पीछे प्रशासनिक कारणों को लेकर चर्चाएं शुरू होना भी स्वाभाविक है।

डॉ. ग्रेवाल के मामले में भी यही स्थिति दिखाई दे रही है। अब मुख्यमंत्री भगवंत मान के स्तर तक मामला पहुंचने के बाद पुलिस महकमे में संभावित फेरबदल को लेकर अटकलें तेज हो गई हैं।

क्या मिलेगी जिले की कमान?

सबसे बड़ा सवाल अब यही है कि क्या पंजाब सरकार डॉ. रवजोत ग्रेवाल को जल्द किसी महत्वपूर्ण जिले का वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बनाकर फील्ड में उतारेगी?

यदि ऐसा होता है तो इसे केवल एक अधिकारी की पोस्टिंग के तौर पर नहीं देखा जाएगा, बल्कि यह संकेत भी माना जा सकता है कि सरकार अनुभवी और परिणाम देने वाले अधिकारियों को फील्ड में अधिक जिम्मेदारी देने की दिशा में आगे बढ़ रही है।

फिलहाल अंतिम निर्णय सरकार के स्तर पर होना बाकी है, लेकिन मुख्यमंत्री के संज्ञान में मामला आने के बाद डॉ. ग्रेवाल की संभावित फील्ड पोस्टिंग को लेकर पंजाब पुलिस के गलियारों में चर्चा जरूर तेज हो गई है।

संपादकीय | हवाई सफर की सुरक्षा हादसों के बाद ही याद आती है?

देश में हवाई यात्रा की सुविधा का दायरा बढ़ाने के लिए विमान सेवाओं का विस्तार किया जा रहा है। लोगों की पहुंच को आसान बनाने के लिए नए अंतरराष्ट्रीय और घरेलू हवाई अड्डों के निर्माण में प्रगति हुई है। इसके साथ ही विमान किराये में भी आए दिन बेलगाम तरीके से बढ़ोतरी होती रहती है। मगर इसी तर्ज पर यात्रियों की सुरक्षा को लेकर गंभीरता कहीं नजर नहीं आती है। कभी तकनीकी खराबी, सतर्कता की कमी, तो कभी मौसम की अप्रत्याशित चुनौतियां विमान हादसों का कारण बनती हैं।

ऐसी ही एक घटना बीते मंगलवार को हुई, जब थाईलैंड के फुकेत से दिल्ली आ रहा एअर इंडिया का एक विमान वायुमंडलीय अस्थिरता यानी टर्बुलेंस के कारण हवा में अपनी निर्धारित ऊंचाई से अचानक लगभग तीन सौ फुट नीचे आ गया, जिससे सत्रह यात्री घायल हो गए। हालांकि, बाद में इस विमान को दिल्ली हवाई अड्डे पर सुरक्षित उतार लिया गया। सवाल है कि देश भर में होने वाले विमान हादसों से सबक क्यों नहीं लिया जाता है? इस तरह की दुर्घटनाओं को रोकने और विमान यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी आखिर किसकी है?

यह सच है कि हाल के वर्षों में हवाई सफर की सुविधा को विस्तार देने के लिए उड़ानों की संख्या में बढ़ोतरी की गई है। मगर यात्रियों की सुरक्षा को लेकर तकनीकी और सतर्कता के स्तर पर माकूल प्रबंधों का अभाव साफ नजर आता है। पायलटों और अन्य प्रशिक्षित कर्मियों की जरूरत के मुताबिक तैनाती नहीं हो पाने से संचालन तंत्र पर दबाव बढ़ रहा है और इससे मानवीय चूक की संभावनाएं भी अक्सर बनी रहती हैं। अंतरराष्ट्रीय

नागरिक उड्डयन संगठन के अनुसार, करीब पैंसठ फीसद विमान दुर्घटनाओं के पीछे मानवीय चूक एक प्रमुख कारण होती है।

एअर इंडिया का जो विमान वायुमंडलीय अस्थिरता के कारण असंतुलित हुआ, उसमें 137 यात्री और चालक दल के आठ सदस्य सवार थे। अगर पायलट के समझने में थोड़ी सी भी चूक होती, तो बड़ा हादसा हो सकता था। इससे पहले भी इस तरह की घटनाएं हो चुकी हैं। फिर क्या वजह है कि ऐसी स्थिति से निपटने के लिए तकनीकी रूप से मानक संचालन प्रक्रिया में सुधार नहीं हो पाया है?

सवाल यह भी है कि इस घटना के दौरान खराब मौसम की स्थिति में संभावित वायुमंडलीय अस्थिरता के बारे में चालक दल की ओर से यात्रियों को पहले से सचेत करने की सामान्य मानक संचालन प्रक्रिया का पालन किया गया था या नहीं? अगर यात्रियों को समय रहते सतर्क कर दिया जाए, तो विमान में मौजूद सुरक्षात्मक उपायों के इस्तेमाल से उनके हताहत होने की संभावना कम होती है। नागर विमानन महानिदेशालय इस घटना की जांच कर रहा है, लेकिन यह सवाल भी महत्त्वपूर्ण है कि क्या इस जांच के नतीजे से सबक लेकर भविष्य में ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए अतिरिक्त सुरक्षा उपायों पर ध्यान दिया जाएगा या फिर इसे भी संबंधित हादसे तक ही सीमित रखा जाएगा? हालांकि, विमान हादसों की जांच और विश्लेषण की प्रक्रिया में समूचे तंत्र की गंभीरता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पिछले साल अहमदाबाद में हुई एअर इंडिया की विमान दुर्घटना की अंतिम जांच रिपोर्ट एक साल बाद भी सामने नहीं आई है। इससे साफ है कि अगर किसी विमान हादसे की जांच रिपोर्ट आने में ही इतना लंबा वक्त लग जाए, तो यात्रियों के सुरक्षित सफर की स्थिति क्या होगी, इसका आकलन करना मुश्किल नहीं है।

पंजाब में आतंकी नेटवर्क का पर्दाफाश

सरकार का दावा है कि देश में आतंकवाद अब अपनी अंतिम सांसें ले रहा है, मगर हकीकत इससे कहीं अलग नजर आती है। सीमा पार से आतंकवाद भारत की सुरक्षा और शांति के लिए आज भी चुनौती बना हुआ है। विदेशी धरती से संचालित होने वाले आतंकी संगठन घुसपैठ से लेकर हिंसक गतिविधियों को अंजाम देने के लिए मौके की तलाश में रहते हैं। आंतरिक सुरक्षा को कमजोर करने की उनकी साजिश कई परतों में दिखाई देती है। पंजाब पुलिस ने बीते मंगलवार को दो आतंकी तंत्रों का भंडाफोड़ कर चार नाबालिगों समेत नौ लोगों को पकड़ा है। पुलिस का दावा है कि ये सभी पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई के इशारे पर काम कर रहे

थे। साथ ही यह खुलासा भी हुआ है कि आरोपी दिल्ली के जंतर-मंतर पर हुए छात्र आंदोलन को निशाना बनाने की साजिश रच रहे थे। पुलिस भले ही इसे अपनी कामयाबी के तौर पर देख रही हो, लेकिन इससे सुरक्षा और खुफिया एजेंसियों की कार्यप्रणाली पर भी सवाल खड़े हो गए हैं कि आखिर इन आतंकी तंत्रों की भनक पहले क्यों नहीं लग पाई? पुलिस की जांच में यह बात भी सामने आई है कि आतंकियों के इस गिरोह ने पंजाब में कई जगह रेल पटरियों के पास निगरानी कैमरे लगाए थे। स्थिति की गंभीरता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इन कैमरों से ली गई तस्वीरें सीमा पार बैठे आकाओं को भेजी जाती थीं। हाल के दिनों में पंजाब में रेल पटरियों पर धमाके की कई घटनाएं हुई हैं और अब उन्हें भी आतंकियों की इसी तरह की साजिश से जोड़कर देखा जा रहा है। हैरत इस बात की है कि आतंकी गिरोह के सदस्य कैमरे लगाकर रेल पटरियों की नियमित निगरानी कर रहे थे और पुलिस एवं खुफिया एजेंसियों को इसकी जरा भी भनक नहीं लग पाई। यही नहीं, पुलिस का दावा है कि पकड़े गए आतंकी पिछले दिनों विद्यार्थियों के प्रदर्शन के दौरान पेट्रोल बम बनाने का सामान लेकर दिल्ली के जंतर-मंतर तक पहुंच गए थे। इसे सुरक्षा में लापरवाही नहीं, तो और क्या कहा जाएगा? प्रदर्शन के दौरान आतंकी अगर अपने मंसूबे में कामयाब हो जाते, तो किस तरह की स्थिति पैदा हो सकती थी, इसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है।

आज का कार्टून

राष्ट्रमंडल खेल 2026: चुनौतियों के बीच चमका भारत

ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों ने भारत को यह विश्वास अवश्य दिलाया है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी चुनौतीपूर्ण क्यों न हों, भारतीय खिलाड़ी हर मंच पर देश का गौरव बढ़ाने का सामर्थ्य रखते हैं। अब आवश्यकता इस बात की है कि इन उपलब्धियों को अंतिम लक्ष्य न मानकर उन्हें ओलंपिक और वैश्विक खेल महाशक्ति बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में देखा जाए। जिन खेलों में भारत विश्वस्तरीय शक्ति बन चुका है, उन्हें और सशक्त किया जाए तथा एथलेटिक्स, तैराकी, जिम्नास्टिक और अन्य ओलंपिक खेलों में भी दीर्घकालिक निवेश बढ़ाया जाए। यदि भारत अपनी खेल नीतियों में निरंतरता बनाए रखता है, खिलाड़ियों को वैज्ञानिक प्रशिक्षण, विश्वस्तरीय सुविधाएं और दीर्घकालिक समर्थन उपलब्ध कराता है तो वह दिन दूर नहीं, जब राष्ट्रमंडल ही नहीं, ओलंपिक और अन्य वैश्विक प्रतियोगिताओं में भी भारत पदक तालिका के शीर्ष देशों में नियमित रूप से दिखाई देगा।

योगेश कुमार गोयल

राष्ट्रमंडल खेल केवल पदकों की प्रतियोगिता नहीं बल्कि किसी देश की खेल संस्कृति, प्रतिभा विकास, खेल विज्ञान, प्रशिक्षण व्यवस्था और दीर्घकालिक खेल नीति का दर्पण भी होते हैं। ग्लासगो (स्कॉटलैंड) में 23 जुलाई से 2 अगस्त तक आयोजित राष्ट्रमंडल खेलों का समापन भारत के लिए अनेक उपलब्धियों, कुछ अधूरी अपेक्षाओं और भविष्य की नई संभावनाओं के साथ हुआ। भारतीय दल ने 13 स्वर्ण, 17 रजत और 9 कांस्य सहित कुल 39 पदक जीतकर पदक तालिका में चौथा स्थान प्राप्त किया। यह उपलब्धि इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस बार प्रतियोगिता के कार्यक्रम में निशानेबाजी, कुश्ती, बैडमिंटन, हॉकी, टेबल टेनिस इत्यादि भारत के कई पारंपरिक मजबूत खेल शामिल ही नहीं थे। इन खेलों में भारत सामान्यतः बड़ी संख्या में पदक जीतता रहा है। ऐसे में सीमित अवसरों के बावजूद चौथा स्थान बनाए रखना भारतीय खिलाड़ियों की क्षमता और जुझारूपन का प्रमाण है। पदक तालिका में ऑस्ट्रेलिया ने 70 स्वर्ण सहित कुल 171 पदक जीतकर एक बार फिर अपना दबदबा कायम रखा। इंग्लैंड 110 पदकों के साथ दूसरे तथा कनाडा 62 पदकों के साथ तीसरे स्थान पर रहा। मेजबान स्कॉटलैंड भी 39 पदकों के साथ प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए पांचवें स्थान पर रहा। भारत और स्कॉटलैंड के कुल पदक समान रहे लेकिन स्वर्ण पदकों की संख्या के आधार पर भारत चौथे स्थान पर रहा।

यदि पिछले राष्ट्रमंडल खेलों के प्रदर्शन की तुलना करें तो एक दिलचस्प तस्वीर सामने आती है। वर्ष 2018 में ऑस्ट्रेलिया के गोल्ड कोस्ट में आयोजित राष्ट्रमंडल खेलों में भारत ने 26 स्वर्ण, 20 रजत और 20 कांस्य सहित कुल 66 पदक जीतकर तीसरा स्थान हासिल किया था। उस प्रतियोगिता में निशानेबाजी ने अकेले 16 पदक दिलाकर भारत की सफलता में सबसे बड़ी भूमिका निभाई थी। इसके अलावा मुक्केबाजी, भारोत्तोलन और कुश्ती में भी भारतीय खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया था। 2022 में इंग्लैंड के बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों में भारत ने 22 स्वर्ण, 16 रजत और 23 कांस्य सहित कुल 61 पदक जीतकर चौथा स्थान प्राप्त किया था। तब कुश्ती में भारत के सभी 12 पहलवानों ने पदक जीतकर इतिहास रचा था जबकि भारोत्तोलन और टेबल टेनिस में भी भारतीय खिलाड़ियों ने उल्लेखनीय सफलता अर्जित की थी। इन दोनों आयोजनों की तुलना में 2026 के ग्लासगो खेलों में भारत के कुल पदकों की संख्या घटकर 39 रह गई। पहली दृष्टि में यह गिरावट चिंताजनक लग सकती है किंतु यदि प्रतियोगिता के कार्यक्रम का विश्लेषण किया जाए तो स्पष्ट होता है कि भारत के अनेक पदक संभावित खेल इस बार आयोजित ही नहीं किए गए। इसलिए केवल पदकों की संख्या के आधार पर प्रदर्शन का मूल्यांकन करना उचित नहीं होगा। वास्तव में भारत ने उपलब्ध अवसरों का काफी प्रभावी उपयोग किया और जिन खेलों में उसने भाग लिया, उनमें उल्लेखनीय सफलता अर्जित की।

इस बार भारतीय मुक्केबाजों ने राष्ट्रमंडल खेलों के इतिहास का सर्वश्रेष्ठ अभियान चलाया। भारत ने मुक्केबाजी में सात स्वर्ण और तीन रजत सहित कुल दस पदक जीतकर नया इतिहास रच दिया। महिला मुक्केबाजों ने विशेष रूप से प्रभावित किया। जैस्मीन लम्बोरिया, प्रिया घनघस, साक्षी चौधरी और प्रीति पवार जैसी युवा खिलाड़ियों ने यह संकेत दिया कि भारतीय महिला मुक्केबाजी का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। ओलंपिक पदक विजेता लवलीना बोरगोहेन स्वर्ण से भले चूक गई लेकिन उनका अनुभव और प्रदर्शन भारतीय मुक्केबाजी की मजबूती का प्रमाण बना रहा। पुरुष वर्ग में भी सचिन सिवाच और अंकुश सहित अन्य मुक्केबाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए भारत की पदक संख्या बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह सफलता दर्शाती है कि भारतीय मुक्केबाजी अब केवल कुछ खिलाड़ियों पर निर्भर नहीं रही बल्कि उसके पास प्रतिभाओं की व्यापक श्रृंखला तैयार हो चुकी है।

भारोत्तोलन ने भी भारत की प्रतिष्ठा बनाए रखी। पिछले एक दशक में इस खेल में भारतीय खिलाड़ियों ने

निरंतर प्रगति की है। ग्लासगो में भी उन्होंने अपने प्रदर्शन से यह साबित किया कि विश्व स्तर पर भारत अब एक मजबूत शक्ति बन चुका है। जूडो में भारतीय खिलाड़ियों ने अपेक्षा से बेहतर प्रदर्शन किया और कई महत्वपूर्ण पदक जीतकर यह संदेश दिया कि यह खेल भी भारत में तेजी से विकसित हो रहा है। हालांकि जूडो खिलाड़ी तूलिका मान का डोपिंग रोधी नियमों के अंतर्गत तीन बार 'वेयरअबाउट्स' संबंधी जानकारी देने में विफल रहने के कारण अस्थायी निलंबन और प्रतियोगिता से बाहर होना भारतीय दल के लिए एक बड़ा झटका था। यह घटना बताती है कि विश्वस्तरीय प्रतिस्पर्धा में केवल खेल कौशल ही नहीं, डोपिंग रोधी नियमों के प्रति पूर्ण जागरूकता और अनुशासन भी उतना ही आवश्यक है।

एथलेटिक्स में भारत का प्रदर्शन इस बार विशेष चर्चा का विषय रहा। गुलवीर सिंह ने राष्ट्रमंडल खेलों के इतिहास में नया अध्याय जोड़ते हुए 10,000 मीटर दौड़ में रजत और 5,000 मीटर दौड़ में कांस्य पदक जीतकर इतिहास रच दिया। वे एक ही राष्ट्रमंडल खेल में ट्रैक एवं फील्ड स्पर्धाओं में दो पदक जीतने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बने। इससे पहले भारत को इन लंबी दूरी की स्पर्धाओं में कभी पदक नहीं मिला था। यह उपलब्धि भारतीय एथलेटिक्स के बदलते स्वरूप और वैज्ञानिक प्रशिक्षण प्रणाली की सफलता का संकेत देती है। पैरा खेलों में भी भारत ने 3 स्वर्ण, 2 रजत और 2 कांस्य सहित कुल सात पदक जीतकर नया इतिहास बनाया। यह उपलब्धि इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह राष्ट्रमंडल खेलों के पैरा वर्ग में भारत के अब तक के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के बराबर है।

यदि भारतीय दल के प्रदर्शन का गहन विश्लेषण किया जाए तो स्पष्ट होता है कि इस बार महिलाओं ने शानदार योगदान दिया। महिला खिलाड़ियों ने 8 स्वर्ण सहित कुल 16 पदक जीतकर भारतीय खेलों में बढ़ती महिला भागीदारी और उत्कृष्टता का परिचय दिया। दूसरी ओर पुरुष खिलाड़ियों ने कुल 23 पदक जीतकर संतुलित प्रदर्शन किया। फिर भी यह स्वीकार करना होगा कि 2026 का प्रदर्शन भारत के लिए संतोषजनक अवश्य है लेकिन ऐतिहासिक नहीं। वर्ष 2010 के नई दिल्ली राष्ट्रमंडल खेल आज भी भारत के स्वर्णिम अध्याय बने हुए हैं, जब भारत ने 38 स्वर्ण सहित कुल 101 पदक जीतकर ऑस्ट्रेलिया के बाद दूसरा स्थान प्राप्त किया था। घरेलू मैदान का लाभ अपनी जगह है लेकिन वह प्रदर्शन यह भी दर्शाता है कि यदि मजबूत खेल अवसंरचना, व्यापक खिलाड़ी आधार और सुव्यवस्थित तैयारी हो तो भारत शीर्ष देशों को कड़ी चुनौती देने की क्षमता रखता है।

भारत की खेल यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष अब यह है कि देश अब कुछ चुनिंदा खेलों तक सीमित नहीं रह गया है। पहले भारत की अधिकांश सफलता निशानेबाजी, कुश्ती, बैडमिंटन और भारोत्तोलन तक सीमित रहती थी जबकि अब मुक्केबाजी, जूडो, एथलेटिक्स और पैरा खेलों में भी लगातार नए खिलाड़ी उभर रहे हैं। यह परिवर्तन भारत की खेल नीति, खेलो इंडिया जैसी योजनाओं, बेहतर प्रशिक्षण सुविधाओं, खेल विज्ञान, पोषण और खिलाड़ियों को मिलने वाले आर्थिक सहयोग का सकारात्मक परिणाम है। हालांकि अभी भी प्रतिभा पहचान, जमीनी स्तर पर कोचिंग, खेल चिकित्सा, मानसिक प्रशिक्षण और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के प्रतिस्पर्धी अनुभव को और मजबूत करने की आवश्यकता बनी हुई है। अब भारतीय खेल जगत की निगाहें वर्ष 2030 पर टिक गई हैं, जब राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी अहमदाबाद करेगा। यह केवल एक खेल आयोजन नहीं बल्कि भारत के लिए विश्व के सामने अपनी खेल क्षमता, आधुनिक अवसंरचना और संगठनात्मक दक्षता प्रदर्शित करने का सुनहरा अवसर होगा।

ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों ने भारत को यह विश्वास अवश्य दिलाया है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी चुनौतीपूर्ण क्यों न हों, भारतीय खिलाड़ी हर मंच पर देश का गौरव बढ़ाने का सामर्थ्य रखते हैं। अब आवश्यकता इस बात की है कि इन उपलब्धियों को अंतिम लक्ष्य न मानकर उन्हें ओलंपिक और वैश्विक खेल महाशक्ति बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में देखा जाए। जिन खेलों में भारत विश्वस्तरीय शक्ति बन चुका है, उन्हें और सशक्त किया जाए तथा एथलेटिक्स, तैराकी, जिम्नास्टिक और अन्य ओलंपिक खेलों में भी दीर्घकालिक निवेश बढ़ाया जाए। यदि भारत अपनी खेल नीतियों में निरंतरता बनाए रखता है, खिलाड़ियों को वैज्ञानिक प्रशिक्षण, विश्वस्तरीय सुविधाएं और दीर्घकालिक समर्थन उपलब्ध कराता है तो वह दिन दूर नहीं, जब राष्ट्रमंडल ही नहीं, ओलंपिक और अन्य वैश्विक प्रतियोगिताओं में भी भारत पदक तालिका के शीर्ष देशों में नियमित रूप से दिखाई देगा।

शिक्षा सुधार के दावे बहुत, बुनियादी बदलाव अब भी अधूरा

भारत शिक्षा के मामले में सदियों से अग्रणी रहा। हमारी पुरानी शिक्षा व्यवस्था दुनिया को राह दिखाती थी। बड़ी संख्या में विद्यार्थी यहां पढ़ने के लिए आते थे। यहां गुरुकुल से कई ऐसे विद्यार्थी निकले, जिन्होंने दुनिया को राह दिखाई। मगर समय बदलने के साथ भारतीय शिक्षा प्रणाली में अनेक बदलाव हुए। भारत, जो कभी ज्ञान और नवजागरण के क्षेत्र में अग्रणी था, वह पिछड़ता चला गया। हम पश्चिमी शिक्षा की नकल करने लगे। हमारी शिक्षा व्यवस्था ने शोध और अन्वेषण को कम कर दिया। कला संकाय का महत्व कम होता चला गया। शिक्षा पर बाजार हावी होने लगा। नए रास्ते पर चलने की हमारी ललक खत्म हो गई। दुनिया डिजिटल होती गई और इंटरनेट उसकी आधारभूमि बन गया। आज भारत कृत्रिम मेधा का इस्तेमाल कर दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल होना चाहता है। यह सच है कि ज्ञान के आकाश का कोई अंत नहीं, लेकिन भारत अगर सचमुच उस ऊंचाई को छूना चाहता है, तो उसे शिक्षा व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन करने होंगे।

सुरेश सेठ

पिछले डेढ़ दशक में डिजिटल तकनीक को अपनाने और इस दिशा में आगे बढ़ने के कई दावे किए गए हैं। भारत कृत्रिम मेधा का अगुआ बनने की कोशिश भी कर रहा है, लेकिन एक कमी रह गई। यह कमी है संकल्प की। हम बेहतरीन शिक्षक तैयार नहीं कर पा रहे हैं। विद्वता बढ़ाने पर भी कोई जोर नहीं दिखता। इच्छा और आकांक्षा जरूर थी, लेकिन अध्यापकों की प्रतिबद्धता में बदलाव नहीं आया। विद्यार्थी उपलब्धियां हासिल करने को ही लक्ष्य मान बैठे। नतीजा यह कि मेहनत और अन्वेषण कर आगे जाने का उत्साह कम पड़ता चला गया। यही कारण है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था धीरे-धीरे पिछड़ती चली गई। बच्चों को पढ़ाने में शिक्षक भी इसलिए पिछड़े, क्योंकि उन्होंने खुद को अद्यतन नहीं किया। नतीजा यह कि हमारे विद्यार्थी समय के साथ आगे नहीं बढ़े। डिजिटल में सहज होने के क्रम में हम कागज-कलम से दूर हो गए। इसी के साथ हम अपनी पुस्तक संस्कृति भी भूल गए। मोबाइल फोन पर ही कक्षाएं लगने लगीं। बच्चे भी वहीं पढ़ने लगे। किताबें कोने में धरी रह गईं। डिग्रियां पाने और सार्वजनिक प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त करने की होड़ शुरू हो गई। इसके परिणामस्वरूप शिक्षा का असली उद्देश्य पीछे रह गया।

प्रवेश परीक्षाओं में गड़बड़ी कोई नई बात नहीं है। यह काफी समय से हो रही है। मगर जब बड़े पैमाने पर आयोजित होने वाली परीक्षाओं के प्रश्नपत्र बाहर आने लगे, तब इस समस्या को गंभीरता से लिया गया और यह मुद्दा बनने लगा। प्रश्नपत्र लीक को कुछ गिरोहों ने अपना धंधा बना लिया और वे लाखों विद्यार्थियों के भविष्य से खेलने लगे। वर्ष 2024 और 2026 में बड़े पैमाने पर प्रश्नपत्र लीक हुए। निराशा में डूबे कुछ विद्यार्थियों ने खुदकुशी की। इन प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच विद्यार्थियों ने दिल्ली के जंतर-मंतर पर पिछले दिनों आंदोलन किया। युवा पीढ़ी का असंतोष आक्रोश में बदल गया। नतीजा, शिक्षा मंत्री को त्यागपत्र देना पड़ा। हालांकि, इससे शिक्षा व्यवस्था में कोई बदलाव होगा, इसकी कोई गारंटी नहीं।

प्रवेश परीक्षाओं को दुरुस्त करने के लिए सरकार को भागीरथ प्रयास करने होंगे। पिछले दिनों प्रधानमंत्री ने इंस्टाग्राम पर संबोधन कर आक्रोशित विद्यार्थियों को शांत करने और उन्हें समझाने का प्रयास किया कि सरकार अपनी तरफ से क्या कर रही है। इसमें उन्होंने प्रश्नपत्र लीक करने वाले अपराधियों को दंड देने की व्यवस्था की बात भी की। बीती 27 जुलाई को जब संसद का सत्र दोबारा शुरू हुआ, तो परीक्षा संशोधन विधेयक पेश किया गया। इससे प्रश्नपत्र लीक करने वाले गिरोहों पर नकेल कसी जा सकेगी। सरकार इस विधेयक को काफी महत्त्व दे रही है, मगर इसमें गंभीर चिंतन नहीं दिखता है। इस पर संसद में व्यापक बहस भी नहीं हो पाई। कड़े दंड के प्रावधानों वाला यह विधेयक बहुमत के बल पर पारित तो हो गया, लेकिन परीक्षा व्यवस्था और शिक्षा में सुधार के लिए यह काफी नहीं है।

पिछला अनुभव बताता है कि दोषियों को सजा देने के कानून तो पहले भी थे। चाहे उनमें सजा इतनी सख्त नहीं थी, लेकिन फिर भी पिछले पच्चीस वर्षों में देश भर के अलग-अलग हिस्सों से जो प्रश्नपत्र लीक हुए और माफिया ने जो कारगुजारी की, उस हिसाब से बड़े पैमाने पर धर-पकड़ नहीं हुई।

फिलहाल सरकार ने एक बड़ी पहल की है। उसने त्वरित अदालतें बनाई हैं। तीन महीने में फैसला देकर अपराधियों को कड़ी सजा देने की घोषणा भी की गई है, लेकिन पिछले दिनों एक मामले में वकील के हाजिर न होने से अगली तारीख दे दी गई। दंड प्रक्रिया को चुस्त कर प्रवेश परीक्षाओं को शुचितापूर्ण तो बनाया जा सकता है, लेकिन सवाल है कि यह पूरी तरह दोषरहित कैसे होगी? हालांकि, सरकार इसको लेकर गंभीर दिख रही है। उसने छह सदस्यीय उच्चस्तरीय कार्यबल बना दिया है, जो राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी के काम की समीक्षा करेगा और प्रश्नपत्र लीक रोकने के लिए अपनी सिफारिशें देगा। इससे परीक्षा प्रणाली में सुधार की उम्मीद है।

देश की शिक्षा प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन करने की जरूरत है। नीति-निर्माताओं को यह बात ध्यान में रखनी होगी कि शिक्षा के क्षेत्र में दुनिया आज कितने आगे बढ़ चुकी है और हम अभी नारे ही गढ़ रहे हैं। हम नारे लगाते हैं डिजिटल भारत के। हम बताते हैं कि भारत में मोबाइल क्रांति हो गई है और जल्द ही कृत्रिम मेधा को भी साध लिया जाएगा। इस दिशा में प्रगति निस्संदेह प्रशंसनीय है, मगर सवाल यह है कि क्या हम युवा पीढ़ी को नए रोजगार के काबिल बना रहे हैं? आज भी न तो अध्यापक और न ही छात्र नई राहों के अन्वेषी हैं। वे कोई नया शोध करना नहीं चाहते। वे बस डिग्रियां चाहते हैं। आज भी पाठ्यक्रमों में बड़ा बदलाव नहीं होता। बरसों तक उन्हें वहीं पढ़ाया जाता है।

भारत की साठ फीसद आबादी गांवों में बसती है। मगर वहां पुस्तकों की पर्याप्त उपलब्धता नहीं है, मोबाइल नेटवर्क या तो है ही नहीं या फिर बहुत कमजोर है और यहां चर्चा होती है कि नीट सहित सारी प्रतियोगी परीक्षाएं कंप्यूटर से ली जानी चाहिए। सुधार कैसे होगा, जबकि स्कूलों में पढ़ाई का तरीका वही पुराना है? सरकार कहती है कि ज्यादातर बच्चे स्कूल जाने लगे हैं, लेकिन सच यह है कि दसवीं तक पहुंचने के बाद उनमें से कई बच्चे स्कूल से निकल जाते हैं। उच्च स्तर पर शिक्षा में बदलाव का आधार स्कूली शिक्षा होनी चाहिए। बदलाव करना है, तो प्राथमिक स्तर से हो। शिक्षा को रोजगारपरक बनाया जाए, लेकिन यह सब रोजगार की गारंटी के बिना संभव नहीं होगा। जो विद्यार्थी पढ़ने के लिए आता है, वह आश्वस्त हो कि उसकी मेहनत और डिग्री के मुताबिक उसे रोजगार अवश्य मिलेगा। इससे छात्रों का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण अपने आप बदल जाएगा। अध्यापकों पर भी बड़ी जिम्मेदारी है। नए माहौल के मुताबिक जब तक वे स्वयं को अद्यतन नहीं करेंगे, तब तक बात नहीं बनेगी।

टाइगर श्रॉफ के साथ एक्शन फिल्म बनाएंगे विक्की जैन, शुरू किया प्रोडक्शन हाउस

विक्की जैन ने प्रोडक्शन हाउस लॉन्च किया है। उनके VJ Frames नाम से प्रोडक्शन हाउस के बैनर तले बनने वाली पहली फिल्म में टाइगर श्रॉफ नजर आएंगे। इस एक्शन फ्रैंचाइजी के निर्देशन की जिम्मेदारी रेमो डिसूजा संभालेंगे। विक्की जैन चर्चित टीवी अभिनेत्री अंकिता लोखंडे के पति हैं। विक्की अब फिल्म निर्माता की कुर्सी पर बैठेंगे। अपने बैनर की पहली एक्शन फिल्म में उन्होंने टाइगर श्रॉफ को साइन किया है। उनके अलावा अभिषेक बनर्जी और एल्विश यादव भी नजर आएंगे।

शुरू हुई शूटिंग, टाइटल तय नहीं

अपने प्रोडक्शन हाउस के बैनर तले विक्की जैन पहली फिल्म एक्शन फ्रैंचाइजी बना रहे हैं। हालांकि, फिलहाल इसका टाइटल तय नहीं हुआ है। आज शनिवार से इसकी शूटिंग शुरू हो गई है। अभिनेत्री और विक्की जैन की पत्नी अंकिता लोखंडे ने उन्हें जन्मदिन की बधाई दी है। इसी के साथ प्रोडक्शन हाउस शुरू करने पर शुभकामनाएं भी दी हैं।

टाइगर श्रॉफ वर्क फ्रंट

टाइगर श्रॉफ के वर्क फ्रंट की बात करें तो उन्हें साजिद नाडियाडवाला की 'बागी 4' में देखा गया था। फिल्म बीते साल सितंबर में रिलीज हुई थी। हालांकि, बॉक्स ऑफिस पर यह सफलता हासिल नहीं कर पाई। वहीं, रेमो डिसूजा की बात करें तो उनके निर्देशन में बनी आखिरी फिल्म अभिषेक बच्चन अभिनीत 'बी हैप्पी' थी।

गौरव मेरा कंफर्ट जोन नहीं डॉग वाले बयान पर

आकांक्षा चमोला ने तोड़ी चुप्पी

टेलीविजन अभिनेत्री और 'लॉकअप-2' कंटेस्टेंट रही आकांक्षा चमोला ने पति गौरव खन्ना को लेकर दिए गए विवादित बयान पर चुप्पी तोड़ी। अभिनेत्री ने बताया कि जिस तरह से उनके बयानों को तोड़कर दिखाया गया है, वैसा कुछ भी नहीं था। आकांक्षा चमोला ने शो से बाहर निकलने के बाद मीडिया से बातचीत की। उन्होंने कहा, 'मैं चाहती थी कि शो के अंदर विजिटर के तौर पर मुझसे वो लोग मिलने आए, जिनके साथ मैं अपना कंफर्ट महसूस करती हूं जैसे कि मेरे माता-पिता या फिर डॉग आते तो मुझे अच्छा लगता, क्योंकि इनके साथ मैं अपना कंफर्ट महसूस करती हूं। गौरव भले ही मेरा पति हैं और अब हम डिवॉर्स लेने जा रहे हैं, लेकिन वो मेरा कंफर्ट जोन नहीं हैं। वो पता नहीं क्यों आया, शायद अपनी मर्जी से आया होगा।' दरअसल, शो के दौरान आकांक्षा चपोला के पति गौरव खन्ना उनसे मिलने के लिए आए थे, जिसके कुछ एपिसोड बाद अभिनेत्री ने बताया था कि शो के दौरान गौरव खन्ना की जगह कोई ऐसा मिलने आता, जिसके साथ वो अपनापन महसूस करती, भले उनका डॉग मिलने आता। शो में एंट्री लेने से पहले आकांक्षा चमोला ने अपना सीक्रेट रिवील करते हुए बताया था कि वह और गौरव खन्ना एक साल से अलग रह रहे हैं और तलाक लेने जा रहे हैं। इसके बाद श्रेया कालरा ने उनका दूसरा सीक्रेट रिवील कर दिया था कि वे बायसेक्सुअल हैं, जिसके बाद आकांक्षा चमोला ने ये बात स्वीकारी भी थी। साथ ही ये भी बताया था कि पति गौरव खन्ना को भी उनकी सेक्सुअलिटी के बारे में पता था। रितेश देशमुख और फराह खान द्वारा होस्ट किए गए इस शो में शिल्पा शिंदे, श्रेया कालरा, आकांक्षा चौधरी, योगेश रावत, सुनीता आहूजा, राम कपूर, शिवांगी जोशी, हर्षद चोपड़ा, सूफी मोतीवाला, धीरज धूपर, माधुरी जैन ग्रोवर, रियाज अली और वरुण यादव उर्फ लैला जैसे पॉपुलर नाम थे, हालांकि कंटेस्टेंट श्रेया कालरा ने टॉप 3 की रेस में शिवांगी जोशी और योगेश रावत को हराकर इस सीजन की ट्रॉफी अपने नाम कर 1 करोड़ का इनाम भी अपने नाम किया।

नेटफ्लिक्स ओरिजिनल चुंबक में नजर आएंगी संदीपा धर

शेयर किया लेग-डे वॉर्म-अप रूटीन

मुंबई फिटनेस के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए मशहूर अभिनेत्री संदीपा धर ने हाल ही में अपने फैंस को लेग-डे वर्कआउट की तैयारी की एक झलक दिखाई है। अभिनेत्री ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा किया है, जिसमें उन्होंने अपने लेग-डे से पहले अपनाई जाने वाली एक प्रभावी वॉर्म-अप टेक्निक दिखाई है, जो उनके वर्कआउट रूटीन का अहम हिस्सा है। गौरतलब है कि लेग-डे वर्कआउट में ताकत, लचीलापन और सहनशक्ति की जरूरत होती है। ऐसे में सही वॉर्म-अप मसल्स को एक्टिव करने और शरीर को कठिन एक्सरसाइज के लिए तैयार करने में मदद करता है। संदीपा का यह फिटनेस-फर्स्ट अप्रोच उनकी अनुशासित और नियमित लाइफस्टाइल को दर्शाता है। वर्कफ्रंट की बात करें तो संदीपा धर जल्द ही नेटफ्लिक्स की ओरिजिनल सीरीज 'चुंबक' में नजर आनेवाली हैं। इस एंसेम्बल कॉमेडी सीरीज में उनके साथ नीना गुप्ता, अर्जुन बिजलानी, सुमीत व्यास, हेली शाह और कई अन्य कलाकार दिखाई देंगे। मुंबई के बैकग्राउंड पर आधारित यह सीरीज 28 अगस्त 2026 को नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम होगी। एक ओर जहां संदीपा अपने नए प्रोजेक्ट को लेकर उत्साहित हैं, वहीं दूसरी ओर वह अपनी फिटनेस और वेलनेस को भी उतनी ही प्राथमिकता दे रही हैं। उनका यह संतुलन उनके प्रोफेशनल और पर्सनल लाइफ दोनों के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

'ललकारा' से क्यों हटे फरहान अख्तर? सामने आई वजह

बॉलीवुड एक्टर आमिर खान और आशुतोष गोवारिकर ने अपनी अपकमिंग स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म ललकारा' की कास्टिंग में बड़ा बदलाव किया है। फरहान अख्तर के इस प्रोजेक्ट से हटने के बाद अब एक्टर सिद्धांत गुप्ता इसमें शामिल हो गए हैं।

प्रोजेक्ट से क्यों हटे फरहान?

एक रिपोर्ट के मुताबिक, फरहान अख्तर ने फिल्म से इसलिए किनारा कर लिया क्योंकि इसकी शूटिंग का शेड्यूल संगीतकार आर.डी. बर्मन पर बन रही बायोपिक की शूटिंग से टकरा रहा था।

फरहान की जगह लेंगे सिद्धांत

अब 'ललकारा' में फरहान अख्तर की जगह सिद्धांत गुप्ता अदाकारी करेंगे। सिद्धांत को सीरीज 'जुबली' और 'फ्रीडम एट मिडनाइट' में एक्टिंग के लिए काफी तारीफ मिली है। उम्मीद है कि हाल के वर्षों की सबसे बड़ी स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्मों में से एक मानी जा रही इस फिल्म में एक्टर, आमिर खान के साथ एक अहम किरदार निभाएंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, सिद्धांत फिल्म में मुख्य किरदारों में से एक (पैरेलल लीड) निभाएंगे। स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर हालिया सफलता के बाद उनके करियर में यह एक और बड़ा पड़ाव होगा। खबर है कि एक्टर ने रोल के लिए तैयारी शुरू कर दी है, हालांकि मेकर्स ने अभी तक कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की है।

किस पर आधारित है फिल्म

'ललकारा' क्रिकेटर लाला अमरनाथ की जिंदगी पर आधारित है, जो देश के लिए टेस्ट शतक लगाने वाले पहले भारतीय क्रिकेटर थे। आमिर खान फिल्म में इस मशहूर खिलाड़ी का रोल निभाएंगे। फिल्म में आजादी से पहले और बाद के भारत की पृष्ठभूमि में मैदान के अंदर और बाहर उनके सफर को दिखाया जाएगा।

10 साल बाद लीड हीरो बनकर लौटेंगे इमरान खान

अभिनेता इमरान खान ने काफी वक्त से स्क्रीन से दूरी बना कर रखी थी। मगर अब वह बतौर लीड एक्टर दमदार वापसी के लिए पूरी तरह तैयार हैं। एक बातचीत के दैरान उन्होंने अपनी आगामी फिल्म 'अधूरे हम अधूरे तुम' से जुड़ी जानकारी साझा की।

हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में इमरान खान ने अपनी अगली फिल्म के बारे में काफी कुछ बताया। हॉलीवुड रिपोर्टर से बातचीत में इमरान ने कहा, 'मेरी फिल्म 'अधूरे हम अधूरे तुम' की शूटिंग पूरी हो चुकी है। यह फिलहाल पोस्ट-प्रोडक्शन में है और इस साल के अंत तक इसके रिलीज होने की उम्मीद है। यह एक एडल्ट रोमांटिक कॉमेडी फिल्म है, जो मेरे जीवन के मौजूदा हालात दर्शाती है।' इमरान खान आखिरी बार साल 2015 में रिलीज हुई फिल्म 'कट्टी बट्टी' में बतौर लीड हीरो नजर आए थे। अब वे सीधे फिल्म 'अधूरे हम अधूरे तुम' में लीड रोल प्ले करेंगे। फिल्म के बारे में आगे एक्टर ने कहा, 'मैंने अभी-अभी एक बेहद प्रतिभाशाली युवा अभिनेत्री, गुरफतेह पीरजादा के साथ काम किया है। दरअसल, यह वो फिल्म है जिसे मुझे 10 साल बाद बनाना ही था।' बता दें कि इस फिल्म का निर्देशन निखिल आडवाणी ने किया है। इमरान खान का वर्कफ्रंट इमरान खान ने 2008 में रिलीज हुई 'जाने तू या जाने ना' से अपना बॉलीवुड डेब्यू किया था। इसमें उनके साथ जेनेलिया डिसूजा भी नजर आई थीं। फिल्म बॉक्स आफिस पर एक बड़ी हिट साबित हुई थी। इसके बाद इमरान ने 'लक', 'आई हेट लव स्टोरीज', 'देल्ही बेली' और 'मेरे ब्रदर की दुल्हन' जैसी कई हिट फिल्में दी थीं। इस साल जनवरी में इमरान ने अपने मामा आमिर खान के बैनर तले बनी फिल्म 'हैप्पी पटेल खतरनाक जासूस' में कैमियो किया था।

मेरा बेटा वीर आर्मी में जाना चाहे तो खुशी होगी, मैं उसे रोकूंगा नहीं

कभी असल जिंदगी में सेना में जाने का ख्वाब देखने वाले ऐक्टर जिमी शेरगिल अपनी नई सीरीज ऑपरेशन सफेद सागर में कारगिल युद्ध के हीरो विंग कमांडर बीएस धनोवा की भूमिका निभा रहे हैं। जिमी का मानना है कि देश के जवानों की बहादुरी की ये कहानियां युवा पीढ़ी तक पहुंचना बहुत जरूरी है, ताकि उन्हें अपने देश और जवानों पर गर्व हो और वो सैन्य सेवाओं को अपने करियर के तौर पर चुनें। यहां तक कि अगर उनका खुद का बेटा वीर भी अगर सेना में जाना चाहे तो उन्हें खुशी ही होगी। बकौल जिमी शेरगिल, 'ऑपरेशन सफेद सागर देश के जवानों की बहादुरी की सच्ची कहानी है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़नी बहुत जरूरी है। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो एक वक्त पर जाकर ये बहादुरी खत्म हो जाएगी। जिस तरह की बहादुरी हमारे जवान, वो चाहे एयरफोर्स हो, मिलिट्री हो, नेवी हो, दिखाते हैं, उनके किस्से युवा पीढ़ी तक पहुंचना बहुत जरूरी है।'

ऑपरेशन सफेद सागर देश के जवानों की बहादुरी की सच्ची कहानी है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़नी बहुत जरूरी है। अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो एक वक्त पर जाकर ये बहादुरी खत्म हो जाएगी। जिस तरह की बहादुरी हमारे जवान, वो चाहे एयरफोर्स हो, मिलिट्री हो, नेवी हो, दिखाते हैं, उनके किस्से युवा पीढ़ी तक पहुंचना बहुत जरूरी है।

90 पर्सेंट मार्क्स लाकर भी उस कट ऑफ के पार नहीं

जिमी आगे बताते हैं, 'जब हम स्कूल में थे, तब 99.9 पर्सेंट स्टूडेंट सेना में जाने की कोशिश करते थे। चूंकि उसमें कट ऑफ बहुत ज्यादा होता था तो मेरे जैसे लोग 90 पर्सेंट मार्क्स लाकर भी उस कट ऑफ को पार नहीं कर पाते थे। इसलिए, मेरा तो सपना ही रह गया लेकिन अगर किसी में वो जुनून, वो जज्बा है, वो क्षमता है, आप हर तरीके से फिट हैं तो आपको पहली चॉइस निश्चित तौर पर आर्म्ड फोर्सेस रखनी चाहिए क्योंकि जो जिंदगी वहां पर है, वो और कहीं नहीं है। मैं 2001 से एयर बेस पर जाकर शूट कर रहा हूं, आर्मी एरिया में जा रहा हूं। वो इतनी कमाल की जगह है। जो सुकून, अनुशासन वहां देखने को मिलता है, वो कहीं नहीं है। वो एक अलग ही दुनिया है।'

हमें आपस में लड़ना बंद करना चाहिए

वहीं, विंग कमांडर बीएस धनोवा की भूमिका निभाने को लेकर जिमी ने कहा, 'रियल लाइफ हीरो असल में बड़े आम और सिंपल लोग होते हैं। वे जमीन से जुड़े हुए बेहद विनम्र लोग होते हैं, मगर वो जो काम करते हैं वो हीरोइक होता है। इसलिए, हमने भी शो में सिंपलिसिटी, विनम्रता आदि तो मेंटेन करने की पूरी कोशिश की है। हमारी कोशिश रही है कि हम कहीं भी फैले हुए न लगे।' वहीं, क्या जिमी देश के लिए खुद कुछ करने की चाह रखते हैं? इस सवाल पर उनका कहना था, 'मैं तो सिर्फ इतना कहूंगा कि हमें आपस में लड़ना बंद करना चाहिए। हम लोग आपस में टूटते जा रहे हैं। हमें टूटना नहीं चाहिए, क्योंकि तब बाहर की ताकतें आकर ऐसी चीजों का फायदा उठाती हैं। इसलिए, हम आपस में एकजुट होकर रहें, वही हमारी सबसे बड़ी जीत होगी।'

बेटा जो करना चाहे, मैं साथ दूंगा

जिमी ने कहा कि युवा पीढ़ी को सैन्य सेवाओं को करियर चॉइस में सबसे ऊपर रखना चाहिए, तो क्या वे अपने बेटे वीर को भी यही सलाह देंगे? इस पर उन्होंने कहा, 'वीर अगर क्वॉलिफाई कर सकता है तो बिल्कुल। मैं उसे कभी नहीं रोकूंगा। मैंने हमेशा कहा है कि मेरे बच्चे को जो भी करना है, मैं उसे कभी नहीं रोकूंगा। उनको अगर स्पोर्ट्स में जाना है तो उसमें जाए। ऐसे ही, अगर वो आर्म्ड फोर्सेस में पहुंच सकते हैं, उनमें वो क्षमता है, बुद्धिमत्ता है तो जरूर जाए।'

खाटू श्याम मंदिर में भोले बाबा के गूंज रहे जयकारे

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। सिद्ध धाम श्रीखाटूश्याम धाम मंदिर सुदामानगर में भजन प्रवाहक के के शर्मा के संयोजन में ताली संकीर्तन के माध्यम से सावन के इस पवित्र महीने में भोले बाबा के जयकारे गूंज रहे हैं ।

मंदिर के मुख्य सेवादार संदीप शेरेवाला ने बताया कि सायं 8 बजे प्रारंभ होने वाले इस ताली संकीर्तन में सैकड़ों श्रद्धालु बाबा श्याम, भोले शंकर, हनुमान जी महाराज के भजनों के माध्यम से आए हुए श्रद्धालुओं को निहाल कर रहे हैं । आज की युवा पीढ़ी को नशा मुक्ति का संदेश देते हुए भजनों से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। जिससे यह पीढ़ी सनातन का, धर्म का प्रचार कर अन्य लोगों को भी भगवान की आस्था से जोड़े।

शेरेवाला ने बताया कि कल रविवार 9 अगस्त को कमीका एकादशी का पावन पर्व है।

मंदिर प्रांगण हमेशा से ही सामाजिक सरोकार के कार्यों में अग्रणी रहा है । इसी के तहत औषधिवर्धक तुलसी के पौधों का वितरण भी 9 अगस्त रविवार को प्रात: 7.30 बजे मंदिर प्रांगण में आए हुए श्रद्धालुओं को किया जाएगा।

इसी दिन सांय 07.30 बजे से विशाल भजन संध्या

प्रारंभ होगी। जिसमें शहर के सभी प्रमुख भजन प्रवाहक अपने भजनों के माध्यम से बाबा श्याम को रिझाएंगे।

पंचायती राज चुनाव के लिए विभिन्न प्रकोष्ठों का गठन

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। पंचायती राज आम चुनाव 2026 के लिये चुनाव से पूर्व एवं चुनाव संबंधी प्रबंधन, नियोजन व निष्पादन के लिये विभिन्न प्रकोष्ठों का गठन कर प्रभारी एवं अतिरिक्त प्रभारी अधिकारी नियुक्त किये गये हैं।

जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला कलक्टर डॉ. अमित यादव ने बताया कि पंचायती राज आम चुनाव 2026 के लिये निर्वाचन शाखा, नाम निर्देशन पत्र प्रकोष्ठ जिला परिषद सदस्य/जिला प्रमुख, कानून व्यवस्था प्रकोष्ठ, रूट चार्ट, मतदान/मतगणना दलों का गठन प्रकोष्ठ, यातायात एवं पीओएल, भण्डार एवं भोजन व्यवस्था, ईवीएम, प्रशिक्षण, मतपत्र मुद्रण, भुगतान/लेखा, ईडीसी/डाक मतपत्र एवं फेसिलिटेशन, सामान्य व्यवस्था एवं मतगणना, आईटी एवं सांख्यिकी, क्रय/उपापन एवं सामग्री व्यवस्था कमेटी, विधि, निर्वाचन व्यय प्रकोष्ठ, पेड न्यूज प्रकोष्ठ, एमसीएमसी एवं मीडिया प्लान, स्वीप प्लान, आचार संहिता एवं शिकायतएवं सी-विजिल, नियंत्रण कक्ष एवं पास व्यवस्था, जिला चुनाव नियंत्रण/जिला संपर्क केन्द्र एवं हेल्पलाईन, चुनाव पर्यवेक्षक व्यवस्था, आवास व्यवस्था, दिव्यांग जन/वृद्धजन सहायता, वीडियोग्राफी, सीसीटीवी कैमरा, पंचायत समिति सदस्य निर्वाचन क्षेत्र के रिटर्निंग अधिकारी व सहायक रिटर्निंग अधिकारी (निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण पदाधिकारी एवं समस्त तहसीलदार के इलेक्शन सैटअप प्रकोष्ठ) का गठन किया गया है।

ब्यावर जिला स्थापना दिवस पर आतिशबाजी कर थिरके कांग्रेसी

द सांध्यदीप नेटवर्क, ब्यावर(दिलीप सिंह)। शुक्रवार सायं विकासरत ब्यावर जिले के चतुर्थ स्थापना दिवस के अनुपम अवसर पर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष अजय शर्मा के नेतृत्व में एकता सर्किल पर आतिशबाजी कर कांग्रेस जनों ने ढोल ढमाकों के संग ठुमके लगा कर खुशी का इजहार किया। इस मौके पीसीसी सचिव कल्पना भटनागर,खनन विकास व उत्थान प्रकोष्ठ प्रदेश अध्यक्ष आशीषपाल पदावत,उपाध्यक्ष राजेंद्र ओसतवाल, महासचिव चेतन प्रकाश सांखला,बृजवल्लभ पाराशर, मेघराज बोहरा, नगर परिषद के पूर्व सभापति मुकेश सोलंकी, सचिव यशोदा गुर्जर,प्रवक्ता सोहनलाल मेवाड़ा,रामस्वरूप सेवलिया, अधिवक्ता बालकिशन गोठवाल,गोपाल डाणी,ऋषि लांबा, अश्विनी प्रजापति, लक्ष्मीनारायण वर्मा, रवि डंडायत, एनएसयूआई जिलाध्यक्ष शैलेंद्र सांखला,प्रवीण बडौला,अभिषेक रूणीवाल,बाबूलाल पंवार,पूर्व पार्षद शोभा चौधरी व विमला जूनवाल समेत कांग्रेस जन मौजूद थे। स्थापना दिवस के मौके नगर परिषद द्वारा चांग

गेट, मेवाडी गेट,अजमेरी गेट,सूरजपोल गेट व अंबेडकर सर्किल पर विद्युत साज-सज्जा की गई। मालूम हो सूबे की तत्कालीन गहलोत सरकार ने 7 अगस्त 2023 को ब्यावर उपखंड को विधिवत जिले का दर्जा दिया था।

आर्य समाज के स्तंभ पुरोहित पंडित हर्ष वर्धन का निधन

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। आर्य समाज श्रीगंगानगर के प्रमुख स्तंभ एवं वरिष्ठ पुरोहित पंडित हर्ष वर्धन मिश्र शास्त्री का 7 अगस्त, शुक्रवार को निधन हो गया। आर्य समाज श्रीगंगानगर के प्रधान रतन भटनागर ने बताया कि शास्त्री जी के निधन से पूरे आर्य समाज परिवार एवं प्रियजनों में गहरा शोक व्याप्त है। वैदिक धर्म व समाज सेवा में अग्रगण्य रहे पंडित हर्ष वर्धन मिश्र शास्त्री जी के देवलोकगमन को आर्य समाज एवं संपूर्ण क्षेत्र के लिए अपूरणीय क्षति बताते हुए उन्होंने जानकारी दी कि पंडित हर्ष वर्धन मिश्र शास्त्री का अंतिम संस्कार 8 अगस्त, शनिवार को सुबह 10 बजे हनुमानगढ़ रोड जगदम्बा अंधविद्यालय के समीप स्थित श्रीकल्याण भूमि में किया गया। प्रधान रतन भटनागर ने पंडित हर्ष वर्धन मिश्र शास्त्री के जीवन व योगदान का स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने जीवनपर्यंत आर्य समाज के सिद्धांतों, वैदिक ज्ञान, धर्म-कर्म एवं मानव कल्याण के लिए समर्पित भाव से कार्य किया। उनके द्वारा दिए गए संस्कार एवं मार्गदर्शन सदैव स्मरणीय रहेंगे। आर्य समाज परिवार ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करने तथा शोकाकुल परिवार को यह असहाय दुख सहन करने का धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की है।

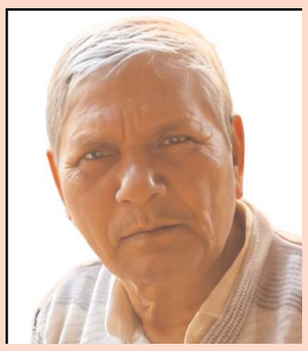

जन्मदिन पर विधायक सोहन नायक का सियासी शक्ति प्रदर्शन

द सांध्यदीप नेटवर्क रायसिंहनगर(सुखदीप सिंह)। विधायक सोहन लाल नायक के जन्मदिन के अवसर पर शुक्रवार को अरोड़वंश धर्मशाला में आयोजित विशाल रक्तदान शिविर एवं जन्मदिन समारोह राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से बेहद चर्चित रहा। कार्यक्रम में क्षेत्रभर से कांग्रेस कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों और आम लोगों का ऐसा जनसैलाब उमड़ा कि धर्मशाला परिसर लोगों से पूरी तरह भर गया। सुबह से लेकर देर शाम तक समर्थकों का पहुंचना लगातार जारी रहा और विधायक को जन्मदिन की शुभकामनाएं देने वालों का तांता लगा रहा।

कार्यक्रम में उमड़ी हजारों कार्यकर्ताओं की भीड़ ने यह संदेश दिया कि विधायक सोहन लाल नायक का जनाधार आज भी मजबूत बना हुआ है। समर्थकों ने फूल-मालाओं और गुलदस्तों से उनका भव्य स्वागत किया तथा केक काटकर जन्मदिन मनाया।

पूरे कार्यक्रम के दौरान कार्यकर्ताओं में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। विधायक सोहन लाल नायक जिंदाबाद के नारों से अरोड़वंश धर्मशाला परिसर गूंजता रहा।

जन्मदिन समारोह के साथ आयोजित रक्तदान शिविर में भी युवाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। बड़ी संख्या में युवाओं ने स्वेच्छा से रक्तदान कर मानव सेवा का संदेश दिया। डॉक्टरों और मेडिकल टीम की मौजूदगी में रक्त संग्रह किया गया। विधायक के जन्मदिवस पर लगे इस रक्तदान में 254 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया,वक्ताओं ने कहा कि रक्तदान से बड़ा

कोई दान नहीं होता और एक यूनिट रक्त किसी जरूरतमंद की जान बचा सकता है।

कार्यक्रम के दौरान विधायक सोहन लाल नायक ने सभी कार्यकर्ताओं, समर्थकों और क्षेत्रवासियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जनता का यह स्नेह और विश्वास ही उनकी सबसे बड़ी ताकत है। उन्होंने कहा कि वे क्षेत्र के विकास, किसानों, युवाओं और आमजन की समस्याओं के समाधान के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करते रहेंगे। उन्होंने रक्तदान करने वाले सभी युवाओं की सराहना करते हुए इसे समाज के लिए प्रेरणादायक कदम बताया।

समारोह में कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने भी विधायक को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए उनके नेतृत्व की सराहना की। वक्ताओं ने कहा कि क्षेत्र के विकास कार्यों और जनता के बीच लगातार सक्रिय रहने का परिणाम है कि जन्मदिन समारोह में अभूतपूर्व जनसमर्थन देखने को मिला।

कार्यक्रम में उमड़ी भारी भीड़ राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बनी रही। लंबे समय बाद किसी राजनीतिक कार्यक्रम में इतनी बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ताओं की मौजूदगी देखने को मिली। समर्थकों का कहना था कि इस आयोजन ने यह साबित कर दिया कि विधायक के साथ संगठन और कार्यकर्ताओं की मजबूत ताकत खड़ी है। वहीं विरोधियों द्वारा लगाए जा रहे तमाम दावों और कयासों पर भी इस कार्यक्रम ने विराम लगाने का काम किया।

इस अवसर पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता बलदेव बराड़, पूर्व प्रधान हरजिंदर सिंह बराड़, सुखदेव सिंह बैंस, पंचायत समिति प्रधान सुनीता गोदारा, प्रधान प्रतिनिधि वीरेंद्र गोदारा, जितेंद्र मान, पूर्व ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष लखबीर समरा सहित अनेक वरिष्ठ कांग्रेस नेता, कई पंचायतों के सरपंच, जिला एवं ब्लॉक स्तर के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि तथा क्षेत्रभर से हजारों की संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता और समर्थक उपस्थित रहे।

पूरे आयोजन के दौरान कार्यकर्ताओं के लिए जलपान एवं अन्य व्यवस्थाएं की गईं। दिनभर चले इस कार्यक्रम में सामाजिक सरोकार और राजनीतिक एकजुटता का अनूठा संगम देखने को मिला। जन्मदिन समारोह और रक्तदान शिविर दोनों ही सफलतापूर्वक संपन्न हुए तथा क्षेत्र की राजनीति में यह आयोजन लंबे समय तक चर्चा का विषय बना रहा।

राज्य कर विभाग ने आयोजित किया ई-टैक्स ऑफिसर संवाद एवं जागरूकता कार्यक्रम

हनुमानगढ़। राज्य कर विभाग द्वारा विभाग की प्रवर्तन कार्यवाहियों की जानकारी देने तथा स्वैच्छिक कर अनुपालन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुक्रवार को आईटीएमएस के ई-टैक्स ऑफिसर मॉड्यूल पर संवाद एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन व्यापार मंडल, हनुमानगढ़ जंक्शन में किया गया। कार्यक्रम का आयोजन राज्य कर विभाग की मुख्य आयुक्त आनंदी के निर्देशों तथा अतिरिक्त आयुक्त (प्रशासन) अश्विनी भार्गव के मार्गदर्शन में किया गया। उपायुक्त अशोक पारीक ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा उद्यमियों एवं व्यापारियों को जीएसटी तथा अन्य आवश्यक सेवाओं की जानकारी एक ही मंच पर उपलब्ध कराने के लिए आईटीएमएस पोर्टल पर ई-टैक्स ऑफिसर एप्लीकेशन विकसित की गई है। इस एप्लीकेशन के माध्यम से व्यापारी अपने व्यवसाय से संबंधित जीएसटी रिटर्न, टर्नओवर, रिफंड, जीएसटी मिसमैच, ई-वे बिल सहित अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां एसएसओ आईडी के माध्यम से मोबाइल अथवा कंप्यूटर पर आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। इससे समय पर आवश्यक जानकारी उपलब्ध होने से भविष्य में विभागीय कार्यवाहियों से बचने में भी सहायता मिलेगी। कार्यक्रम के दौरान मास्टर ट्रेनर एवं सहायक आयुक्त राजीव मिढा ने पावर पॉइंट प्रस्तुति के माध्यम से विभाग की प्रमुख प्रवर्तन कार्यवाहियों तथा ई-टैक्स ऑफिसर एप्लीकेशन के उपयोग की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम की शुरुआत राज्य कर अधिकारी नीतू सारस्वत ने स्वागत उद्बोधन से की।

कार्यक्रम में टैक्स बार एसोसिएशन, सीए एसोसिएशन तथा विभिन्न व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों एवं सदस्यों ने भाग लिया। विभाग की ओर से सहायक आयुक्त अल्पा सारण, सहायक आयुक्त राजीव मिढा, राज्य कर अधिकारी नितिन चुघ, नीतू सारस्वत, धर्मवीर सहित विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

संक्षिप्त पुनरीक्षण हेतु 10 अगस्त को विशेष अभियान

हनुमानगढ़। राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा जारी कार्यक्रम के अनुसार नगरीय निकायों के लिए 1 जनवरी 2026 को अर्हता तिथि मानते हुए नगर परिषद हनुमानगढ़ निर्वाचन क्षेत्र की निर्वाचक नामावलियों का अंतिम प्रकाशन 22 अप्रैल 2026 को किया जा चुका है। आयोग के नवीनतम निर्देशों के अनुसार अंतिम प्रकाशित मतदाता सूची के उपरांत निर्धारित अवधि तक निर्वाचक नामावली का निरंतर अद्यतन किया जाएगा। इस दौरान प्राप्त होने वाले नए नाम जोड़ने, नाम हटाने तथा मतदाता विवरण में संशोधन संबंधी आवेदनों का नियमानुसार निस्तारण कर उनके आधार पर पूरक सूची-2 तैयार की जाएगी।

इस प्रक्रिया का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी पात्र मतदाता अपने सही वार्ड की निर्वाचक नामावली में शामिल होने से वंचित न रहे तथा कोई अपात्र व्यक्ति मतदाता सूची में सम्मिलित न हो। इसी उद्देश्य से नगर परिषद निर्वाचन क्षेत्र हनुमानगढ़ में 8 अगस्त एवं 10 अगस्त 2026 को विशेष अभियान संचालित किया जाएगा।

जिला प्रशासन ने नगर परिषद निर्वाचन क्षेत्र हनुमानगढ़ के सभी पात्र नागरिकों से अपील की है कि यदि उनके नाम में किसी प्रकार का संशोधन कराना हो, नया नाम दर्ज कराना हो, नाम हटवाना हो अथवा वार्ड परिवर्तन संबंधी कोई आवश्यकता हो तो वे निर्धारित प्रपत्रों में आवेदन भरकर संबंधित प्रगणक अथवा पदाभिहित अधिकारी के माध्यम से निर्धारित अवधि में प्रस्तुत करें, ताकि उनकी प्रविष्टियों का समय पर निस्तारण कर मतदाता सूची को अद्यतन किया जा सके।

लायंस क्लब 'सनराइज' द्वारा राजस्थानी लोक संस्कृति से सराबोर 'हरियाली तीज उत्सव' आयोजित

श्रीगंगानगर। लायंस क्लब श्रीगंगानगर 'सनराइज' द्वारा राजस्थानी लोक संस्कृति से सराबोर हरियाली तीज उत्सव हर्षोल्लासपूर्वक आयोजित किया गया। सचिव लायन राकेश वधवा ने बताया कि क्लब परिवार की महिला सदस्यों तथा बच्चों में आपसी सामंजस्य स्थापित करने, पारिवारिक संबंधों को सुदृढ़ बनाने तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों एवं तीज की समृद्ध परंपराओं का संवर्धन करने के उद्देश्य से जस्सा सिंह मार्ग में आयोजित इस सांस्कृतिक एवं पारिवारिक कार्यक्रम में क्लब की महिला सदस्यों तथा बच्चों ने उत्साहपूर्वक बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों, फन गेम्स, सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं एवं लोक गीतों का भरपूर आनंद उठाया।

कार्यक्रम संयोजक नीतू गोयल, नैंसी मित्तल, तनिषा वधवा एवं मोना जिंदल ने उत्कृष्ट प्रबंधन एवं रोचक शैली से संपूर्ण कार्यक्रम के दौरान सभी प्रतिभागियों को निरंतर ऊर्जावान व सक्रिय बनाए रखा।

उन्होंने बताया कि उत्कृष्ट प्रस्तुति के

लिए परिका गर्ग को 'ग्रीन क्वीन' एवं लवीना मदान को 'सीक्रेट क्वीन' तथा अनुशासित सहभागिता के लिए कपिला बहल को 'बेस्ट पार्टिसिपेंट अवार्ड' प्रदान किया गया।

इस मौके पर आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं तथा फन गेम्स के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के अंत में सफल आयोजन के लिए सचिव लायन राकेश वधवा ने कार्यक्रम संयोजकों, सदस्यों एवं प्रतिभागी महिलाओं व बच्चों का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर लायंस क्लब श्रीगंगानगर 'सनराइज' की महिला सदस्य एवं बालक-बालिकाएं उपस्थित थे।

****

एसकेडी विश्वविद्यालय में बोर्ड ऑफ स्टडीज की बैठक, नए पाठ्यक्रमों पर लगी मुहर

हनुमानगढ़। खुशाल दास विश्वविद्यालय (एसकेडी यूनिवर्सिटी) में इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी संकाय तथा कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग की बोर्ड ऑफ स्टडीज की बैठक आयोजित की गई। बैठक में तकनीकी एवं कंप्यूटर पाठ्यक्रमों के संशोधित पाठ्यक्रमों और नई विशेषज्ञता शाखाओं पर विस्तृत चर्चा करते हुए उन्हें स्वीकृति हेतु अनुशंसित किया गया।

गुरु गोबिंद सिंह चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष बाबूलाल जुनेजा ने दोनों विभागों को बधाई देते हुए विद्यार्थी हित में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की तथा भविष्य में भी हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया।

प्रबंध निदेशक दिनेश जुनेजा ने कहा कि बदलते तकनीकी दौर में विद्यार्थियों को उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा एवं प्रशिक्षण उपलब्ध कराना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता है। नए पाठ्यक्रमों और विशेषज्ञता शाखाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीकों का व्यावहारिक ज्ञान मिलेगा, जिससे उनके लिए रोजगार एवं उच्च शिक्षा के बेहतर अवसर उपलब्ध होंगे।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन वरुण यादव ने कहा, अब हम एसकेडी के एक नए युग के साथ बाजार का नेतृत्व करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान

करना नहीं, बल्कि ऐसे प्रोफेशनल तैयार करना है जो उद्योग एवं शोध के क्षेत्र में नेतृत्व कर सकें।

बैठक की अध्यक्षता इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी संकाय की डीन डॉ. कविता ने की। मंच संचालन विक्रम मंगवाना ने किया।

कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग की ओर से सहायक आचार्य प्रदीप स्वामी ने चार वर्षीय बीटेक कार्यक्रमों की अद्यतन टीचिंग स्कीम एवं पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि बीटेक सीएसई की मुख्य स्कीम को संशोधित किया गया है। इसके साथ बीटेक सीएसई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस), बीटेक सीएसई (डेटा साइंस) और बीटेक सीएसई (साइबर सिक्योरिटी) की तीन नई विशेषज्ञता शाखाएं शुरू की जा रही हैं।

कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग की ओर से सहायक आचार्य मनमीत कौर ने बीसीए, एमसीए, एमएससी आईटी, एमएससी कंप्यूटर साइंस, पीजीडीसीए तथा नवीन चार वर्षीय बीसीए ऑनर्स पाठ्यक्रम की संशोधित रूपरेखा प्रस्तुत की। सभी पाठ्यक्रमों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं आउटकम बेस्ड एजुकेशन के अनुरूप तैयार किया गया है।

वहीं, पॉलिटेक्निक विभाग की ओर से सुनील कुमार ने तीन वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम का प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने बताया कि अब डिप्लोमा पाठ्यक्रम को वार्षिक प्रणाली के स्थान पर सेमेस्टर प्रणाली में परिवर्तित किया जा रहा है। इससे विद्यार्थियों को सतत मूल्यांकन, क्रेडिट ट्रांसफर तथा उच्च शिक्षा में आगे प्रवेश के बेहतर अवसर मिलेंगे।

बैठक में प्रो-चांसलर नामिती के रूप में कुलसचिव डॉ. मयंक माथुर, शैक्षणिक विशेषज्ञ के रूप में विवेकानंद ग्लोबल यूनिवर्सिटी जयपुर के सह-आचार्य डॉ. अतुल दाधीच तथा उद्योग विशेषज्ञ के रूप में टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज लखनऊ के वरिष्ठ सलाहकार दीपेश वेवहरे उपस्थित रहे। विशेषज्ञों ने पाठ्यक्रमों को उद्योग की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप बताते हुए महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

इस दौरान आईक्यूएसी निदेशक डॉ. अवधेश शर्मा, शैक्षणिक निदेशक विभूति नारायण, डॉ. कुलवंत सिंह, डॉ. सुनील कुमार, प्रदीप स्वामी, मनमीत कौर, विक्रम मंगवाना, सुमित कुमार, नितिन मीणा, मनोज जोशी सहित विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

आचार्य विशाल सिंगला बने रीजन-10 के सचिव

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। लायंस क्लब में लंबे समय से सक्रिय आचार्य विशाल सिंगला को क्लब के प्रांतपाल आशुतोष वशिष्ठ ने रीजन-10 मे सचिव के पद पर मनोनीत किया है। विशाल सिंगला लायनवाद से करीब 10 वर्षों से जुड़े हुए हैं। लायनवाद के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए अनेक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। वे एक सफल उद्यमी होने के साथ वास्तुशास्त्र में आचार्य भी हैं। रीजन सचिव मनोनीत किए जाने पर पूर्व प्रांतपाल अंजना जैन, सुमेर जैन, पूर्व रीजन चेयरमैन विमल बिहाणी, अरुण अग्रवाल, विनोद सेठी, शैलेंद्र साहू, प्रेम चुघ, अश्विनी बिहाणी, ज्ञानेश्वर अग्रवाल, डॉ रामकृष्ण थरेजा, लायंस क्लब श्रीगंगानगर रॉयल्स के अध्यक्ष विनम्र बिहाणी आदि ने शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल कार्यकाल की कामना की है।